अर्क विवाह

वर की कुण्डली में मंगल व पापग्रह बली हो, कन्या की कुण्डली में पापग्रहों के अभाव से स्त्री हानि की संभावना हो अथवा विवाह संबंध बोलते नाम से तय हो जाय बाद में ज्ञात हो कि वर मंगली है कन्या की कुण्डली नहीं होने से स्त्री हानि की शंका हो द्विपत्नियोग हो तो वर का अर्क विवाह करना चाहिये । इस विधि में संकल्प में प्रथम विवाह ही बोलता होगा । यद्यपि प्रथम संस्कार का प्रचलन व लेख नहीं है । अगर वर का तृतीय विवाह हो रहा हो तो उसके पहिले अर्क विवाह विधि से वर का विवाह संस्कार करना चाहिये।

तृतीय विवाह से पूर्व शुभ विवाह दिन में, हस्त नक्षत्र के दिन अथवा शनिवार, रविवार को शुभ नक्षत्र योग होने पर अर्क विवाह करना चाहिये ।

हस्त युक्त शनिवार में मृत्यु योग होने से इसका त्याग करे ।

गांव के बाहर पूर्व या उत्तर दिशा में स्थित फल पुष्प युक्त वाले अर्क के पास जाकर विधि सम्पादन कराये ।

आचार्य दो होने चाहिये प्रथम आचार्य स्वकुल विधि के लिये दूसरा आचार्य कन्या पिता का कार्य संकल्प करने हेतु ।

गोमय से लिप्य करके मंडल एवं स्थण्डिल की रचना करे । वर अर्क के पश्चिम दिशा में आसन लगाकर बैठे, आचमन, प्राणायाम करे पवित्री करे । प्रतिज्ञा संकल्प करे ।

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णुः श्री भगवतो......एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्ति पूर्वकं मम जन्म कुण्डल्यां विदुरादिदोष निवारणार्थे, तृतीय मानुषी विवाह तज्जन्य दोषनिवृत्यर्थं श्री परमेश्वर सूर्यनारायण प्रीतये तृतीयमर्कविवाह (प्रथमर्क विवाह) महं करिष्ये ।

पुनः जल लेकर संकल्प करे -

तत्रादौ निर्विघ्नातासिद्ध्ये गणपति पूजनं, स्वस्ति पुण्यावाचनं षोड़शमातृका सूर्यादि नवग्रह दिग्पालादि पूजनं नान्दीश्राद्धं आचार्यद्यृत्विग्वरणञ्च करिष्ये ।

दिग्रक्षण करे, कलशार्चन, गणेश मातृका नवग्रह रुद्रकलश का पूजन करे ब्रह्मा आचार्य का वरण करे ।

नान्दी श्राद्ध - मातृका पूजन समय बाद नान्दी श्राद्ध हेतु द्रव्य दान कराये ।

यथा - ॐ पूर्वोक्त शुभ पुण्यतिथौ मम तृतीय (प्रथम) मानुषी विवाहाङ्गत्वेन कर्तव्याभ्युदयिक श्राद्धेइदमग्निदैवतकं हिरण्यं यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजेत् ।

अर्क कन्या दान हेतु आचार्य का वरण

ॐ अद्येत्यादि मम तृतीय (प्रथम मानुषी) विवाह जन्य दोष परिहारार्थे अर्ककन्या प्रादानार्थ एभिर्वरणं द्रव्यैः अमुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनाहं वृणे ।

प्रार्थना करे

कन्यापिता यथा सूर्यो देवानाञ्च प्रजापतिः ।
तथा त्वमर्क दानार्थमाचार्यत्वं कुरु प्रभो ॥

आचार्य कहे - वृतोऽऽस्मीति प्रति वचनं ।

इसके बाद अर्ककन्यापिता (आचार्य) वर का विवाह विधिकी तरह अर्चन करे। यथा - ॐ साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।

विष्टर, पाद्य, अर्घ, आचमन, मधुपर्कप्राशनं पुनः आचमन कराये ।

वर अर्क के समीप जाकर प्रार्थना करे -

त्रैलोक्यव्यापिन् सप्ताश्व छायया सहितो रवे ।
तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजं दोषं निवारय सुखं कुरु ॥

इसके बाद अर्क के पास में मंडल बनाकर कलश स्थापित करे, रक्त वस्त्र से वेष्टन करे । सुवर्ण की बनायी हुई सूर्य प्रतिमा उस पर स्थापित करे ।

इसके बाद "आकृष्णेन" मंत्र से छाया सहित सूर्य का आवाहन करे ।

ॐ भूर्भुवः स्वः छायासहिताय सूर्याय नमः, छाया सहित सूर्यमस्मिन्नर्के आवा. स्था. ।

श्वेत वस्त्र से अर्क का वेष्टन करे । पाद्यादिभिः सम्पूज्य। षोड़शोपचार से पूजन करे, आरति करे । ॐ आपोहिष्ठा. मंत्र से अर्क का अभिषेचन करे ।

इसके बाद वर अर्क की तीन प्रदक्षिणा करे । प्रार्थना करे ।

प्रथम वारम्

मम प्रीतिकरा चेयं मया सृष्टा पुरातनी ।
अर्कणा ब्रह्मणा सृष्टा अस्माकं परिरक्षतु ॥

द्वितीय प्रदक्षिणा

नमस्ते मङ्गले देवि नमः सवितुरात्मजे ।
त्राहिमां कृपया देवि पत्नी त्वं मद्गृहागता ॥

तृतीय प्रदक्षिणा

अर्क त्वं ब्रह्मणा सृष्टःसर्वप्राणि हिताय च ।
वृक्षाणामादिभूत त्वं देवानां प्रीतिवर्द्धनः ॥
तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजं दोषं मृत्युञ्चाशु निवारय ॥

इसके बाद पंचभूसंस्कार करके अग्नि स्थापन करे – वर अर्क के समीप में पूर्व की तरफ मुँह करके बैठे ।

अर्क तथा वर के मध्य अन्तर्पट करे । मङ्गलाष्टक पढ़े । आचार्य संकल्प करे –

ॐ पूर्वोक्त गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्य वरस्य तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजनित सर्वारिष्ट विनाशार्थं तथा च श्री सवितृसूर्यनारायण प्रीतये (ब्रह्म विधिना) अर्क विवाह विधिना अर्क विवाहं करिष्ये ।

वर के हाथों में जल का प्रोक्षण करे– शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवाः आपः ॥ सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टञ्चास्तु । अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च ॥ गन्धाः पान्तु । सौमङ्गल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पान्तु । आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणिपान्तु । सौश्रियमस्तु।

भूमि पर जल छोड़े – तृतीयो (प्रथमो) द्वाहजन्य दोष परिहारोऽस्तु।

ततोवरस्य गोत्रोच्चारपूर्वकं दान सङ्कल्प –

ॐ अद्यामुकमासेऽमुकतिथौ अमुकवासरादि संयुतायां शुभवेलायां अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरान्वितस्य अमुक वेदशाखाऽध्यायिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्राय । अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरास्यामुक शर्मणः पौत्राय । अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरान्वितस्य अमुक शर्मणः पुत्राय । अमुकनाम्ने वराय । काश्यपगोत्रस्य त्रिप्रवरस्य आदित्यस्य प्रपौत्रीम् । काश्यप गोत्रस्य त्रिप्रवरान्वितस्य सवितुः पौत्रीम् । काश्यपगोत्रस्य त्रिप्रवरान्वितस्य सूर्यस्य पुत्रीम् । आर्कीनाम्नीं कन्यां सूर्यदैवत्यां भार्यात्वेन तुभ्यमहं समप्रददे ।

इस संकल्प से वर के हस्त में जल छोड़े । स्वस्ति सूक्त पढ़कर ब्राह्मण वर को आशीष प्रदान करे ।

पुनः संकल्प करे –

ॐ अद्य कृतैतदर्क कन्या दान प्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्नि दैवतं अमुक गोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे ।

इस प्रकार सुवर्ण दक्षिणा देवे । वर कहे ॐ स्वस्ति ।

इसके बाद वर अर्कवृक्ष पर तीन बार पुष्पाक्षताञ्जलि प्रदान करें। यथा-

ॐ यज्ञो मे कामः समृद्ध्यताम् । ॐ धर्मो मे कामः समृद्ध्यताम् । ॐ यशो मे कामः समृद्ध्यताम् ॥

यद्यपि संकल्प में ब्रह्मविधि विवाह का उल्लेख है परन्तु अर्क विवाह पद्धति में राष्ट्रभृत होम, जया होम, सप्तपदी का लेख नहीं है।

यहां सूर्य अरुण संवाद में विष्णु विवाह या कुंभ विवाह के लिये विवाह विधान के पश्चात जिन १० मंत्रों से सूत्र वेष्टन करने को कहा है वही विधि आगे लिखि है।) वर तथा अर्ककन्या का अञ्चल ग्रंथि बंधन करे ।

पांच या दशतन्तु का सूत्र लेवें, गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करें, कुंकुमादि लगाये ।

गायत्री मंत्र व निम्न दश मंत्रों को पढ़ते हुये उस सूत्र से अर्कवृक्ष को ५ बार वेष्टन करे । (कहीं दश बार वेष्टन का लिखा है)

ॐ परित्वागिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायु मनुवृद्धायो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥१॥ इन्द्रस्यूरसींद्रस्य ध्रुवोसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ॥२॥ विभुरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः । श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः ॥३॥ उशिगसि कविङ्घारिरसि बम्भारिरवस्युरसि दुवस्वान् शुन्ध्यूरसि मार्जालीयः सम्राडसि कृशानुः परिषद्योऽसि पवमानो

नभोऽसि प्रतक्वा मृष्टोऽसि हव्यसूदन ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ॥४॥

समुद्रोऽसि विश्वव्यचा अजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यो वागस्यैन्द्रमसि सदोऽस्यृतस्य द्वारो मा मा संताप्तमध्वना मध्वपते प्रमातिर स्वस्ति मेऽस्मिन्पथि देवयाने भूयात् ॥५॥

मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगराःस्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन पातमाग्नयः । पितृतमाग्नये गोपायत मा नमो वोऽस्तु मा माहि ठ सिष्ठ ॥६॥

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित् । त्व ठ सोमतनूकृद्भ्यो द्वेषेभ्योऽन्यकृतेभ्य उरुयन्तासि वरुथ ठ स्वाहा जुषाणो अप्तुराजस्य वेतु स्वाहा ॥७॥॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन्। अयं वाजाञ्जयतु वाजसाता वय ठ शत्रूञ्जयतु जर्हषाण स्वाहा ॥९॥

उरू विष्णोः विक्रमस्वोरु क्षयात् नस्कृधि । धृतं धृतयोने दिवः प्रप्रयज्ञपतिं तिरः स्वाहा ॥१०॥

इसके बाद निम्न मंत्र से पुनः पञ्चगुणी सूत्र अर्क के दक्षिण कंधे पर रखें ।

ॐ वृहस्सामक्षत्रभृद् वृद्धवृण्यं त्रिष्टुभोजः शुभितमुग्रवीरम् । इन्द्रस्तोमेन पंचदशेन मध्यविदं वातेन सगरेण रक्ष ॥

निम्न मंत्र से सूत्र से अर्क के रक्षासूत्र बांधे ।

ॐ यदा बद्ध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ठ शतानीकाय समुनस्य माना तन्नमऽ आबद्ध्नामि शत शारदायायुष्माञ्जरदष्टि र्यथासम् ॥

इसके बाद अर्क के पूर्वादि अष्ट दिशाओं में आठ कुंभ स्थापति करे ।

वस्त्र, त्रिसूत्री से वेष्टन करे, हरिद्रा कुंकुम से चर्चित करे । हरिद्रा सप्तधान्य निक्षेप करे तथा कलशों में विष्णु का आवाहन करे ।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्य पा ठ सुरे स्वाहा ॥

विष्णु का षोड़शोपचार पूजन करके प्रार्थना करें ।

विश्व व्यापिन नमस्तेऽस्तु भक्तप्रिय जनार्दन । तुरीयस्य (अस्य) विवाहस्य अधिकारं प्रयच्छ मे ॥

तत्पश्चात् अर्क की उत्तर दिशा में स्थाण्डिल बनाकर पंचभूसंस्कार पूर्वक वरदनाम्नी अग्नि का स्थापन करें ।

हवन विधि प्रारम्भ करे ।

संकल्प करे –

अद्येह अर्कविवाहकर्मणाहे यक्ष्ये तत्र प्रजापति इन्द्रं अग्निं सोमं बृहस्पतिं अग्नि वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्येनाहं यक्ष्ये ।

(खड़ेहोकर) ॐ समिधोऽभ्याधाय स्वाहा (इत्यारभ्य)। अन्वारब्ध करे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये (इति मनसा)॥
ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय (इत्याधारौ) ॥
ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये ॥

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय (इत्याज्यभागौ) ॥

अन्वारब्ध हटा लेवें। योजक नाम की अग्नि का पूजन करें। तत्पश्चात हवन करे ।

ॐ सङ्गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय । जने मित्रो न दम्पति अनक्ति बृहस्पतेय वाजयाशूँरिवाजौ स्वाहा ॥

इदं बृहस्पतये न मम ॥

ॐ यस्मै त्वा काम कामाय वयं सम्राडच्यजामहे । तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदं त्वं घृतं पिब स्वाहा ॥ (इदमग्नेय)

ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इदं प्रजापतये ॥

इसके बाद प्राजापतये इत्यादि नव आहुति प्रदान करे। स्विष्टकृद्धोहम करे। संस्त्रवप्राशन ब्रह्मग्रंथि विमोक पूर्णपात्र दानादि करे। दशतंतु निष्कासन करे ।

अर्क की प्रदक्षिणा करके प्रार्थना करे ।

मयाकृतमिदं कर्म स्थावरेषु जरायुणा ।
अर्कापत्यानि मे देहि तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥

आचार्य शांतिसूक्त का पाठ करे, देव विसर्जन करे । सूर्य मूर्ति आचार्य को प्रदान करे गोदान अष्टब्राह्मण भोजन का संकल्प करायें।

वस्त्र अलंकार आचार्य को देवे । उसी दिन या पांचवे दिन कलशों के जल का विसर्जन करे, सूर्य को अर्घ देवें । कंकण विमोचन करे।

जल लेकर कहे – अनेन यथाज्ञानेन कृतेनार्कविवाह कर्मणा। श्री परमेश्वरस्वरूपी श्री सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । अनेन कर्मणा तृतीय(प्रथम स्त्री हानि) मानुषी विवाह जन्य दोष परिहारोऽस्तु। क्षमा प्रार्थना करे ।

(इति अर्क विवाहः)

॥ कुंभ विवाह ॥

अगर कन्या की कुण्डली में वैधव्यता, मृतवत्सा, काकवन्ध्या योग हो तो मार्कण्डेय पुराणानुसार कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमा पीपल के साथ कन्या का विवाह करने को कहा है ।

बालवैधव्ययोगे तु कुंभेषु प्रतिमादिभिः ।
कृत्वा लग्नं ततः पश्चात्कन्योद्वाह्येति चापरे ॥

इस विवाह को करने के बाद वर से विवाह को पुनर्भू दोष (पुनर्विवाह) नहीं मानना चाहिये ।

स्वर्णांबुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी ।
तया सह विवाहे तु पुर्नभूत्वं न जायते ।

सूर्यारुण संवादे –

विवाहात्पूर्वकाले च चन्द्रतारावलान्विते ।
विवाहोक्तेन मन्थन्या कुंभेन सह चोद्वहेत् ॥
सूत्रेण वेष्टयेत् पश्चात् दशतन्तु विधानतः ।
कुंकुमालंकृतं देहं तयोरेकान्त मंदिरे ॥
ततः कुंभं च निःसार्य प्रभज्य सलिलाशये ।
ततोभिषेचनं कुर्यात् पञ्चपल्लव वारिभिः ॥

अर्थात् विवाह के पहले चन्द्र व तारा के बलि होने पर विवाहोक्त विधि से घट के साथ एकान्त या मन्दिर में विवाह करके दश बार घट सहित सूत्र से वेष्टन करें कुंकुम से देह अलंकृत करें, तत्पश्चात घट निकालकर तालाब या नदी में विसर्जन करके पञ्चपल्लवों से अभिषेक करना चाहिये।

कुंभविवाह विधि :

हिन्दु देवता तो सपत्नीक है अतः कन्या का उनसे विवाह कर समर्पण किया जाता है। किन्तु जैनधर्म के देवता अविवाहित हैं अतः उनके धर्म के अनुसार इन्द्र या गन्धर्व से विवाह का विधान हो तो इस विधि से करें।

कन्या का पिता विवाह के पूर्व शुभ दिन चन्द्र, ताराबल अनुकूल देखकर एकान्त स्थान, विष्णुमन्दिर, नदी, तालाब या कुए के पास उपयुक्त स्थान में पीवल वृक्ष के नीचे कर्म करायें। स्थान शुद्ध करें, मण्डल वेदी रचना करें, दीप प्रज्वलित करें, गणपति स्मरण पूर्वक संकल्प करें -

ॐ पूर्वोक्त शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे ममामुकगोत्राया: अमुक राशि अमुक कन्याया जन्म समय काले लग्नाद् अमुक अमुक स्थान स्थिता क्रूर, दुष्टग्रहा संसूचित वैधव्य विषकन्या मृतवत्सा काकवन्ध्यादि दोष निराकरण पूर्वकं सौभाग्य प्राप्ति द्वारा भविष्यद्भर्तुरायुः आरोग्यैश्वर्य सुखावाप्तये श्री परमेश्वर प्रीयते च कुंभेन सह कन्योद्वाहकर्माहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन कलश, गणपति मातृका वसोद्धारा पूजनं नान्दी श्राद्ध, पुण्यावाचन आयुष्य मंत्र जपार्चनं करिष्ये तत्रादौ दिग्रक्षण पूर्वकं वरुण गणपत्यादि पूजनं चाहं करिष्ये ।

कन्या को मङ्गलस्नान कराये, वस्त्रादि अलंकार से विभूषित करे। कंकण बंधन करे । मुख्यदेवता का कलश स्थापित करें ।

स्वर्ण की विष्णु प्रतिमा का ''अग्न्युत्तारण'' संस्कार करे । मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा संस्कार करे ।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हंसः अस्याः विष्णुमूर्ते प्राणा इह प्राणा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं .... अस्या विष्णुमूर्ते जीव

इह स्थितः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं......... अस्या विष्णुमूर्ते वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पादपायूप स्थानी सर्वेन्द्रियाणी सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

१६ बार ''ॐ'' का जप करते हुये षोड़श संस्कार की भावना करे ॥ मूर्ति को कलश पर स्थापित करे । ॐ मनोजूतिर्माजस्य.......से प्रतिष्ठा करे । कन्या व पिता वरुण विष्णु की पूजा करें।

वरुणरूप विष्णु की षोड़शोपचार पूजन करे एवं प्रार्थना करे-

वरुणाङ्गस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय ।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरु ॥
देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः ॥

तत्पश्चात् विष्णुमूर्ति को जलपूर्ण कलश में स्थापित करे । विवाह विधि करे । कन्या को कलश के दाहिनी ओर पूर्व की तरफ मुँह करते हुये वेदी के पश्चिम में बिठाये । विवाह विधि की तरह वरुणरूप विष्णु का अर्चन करे विष्टर प्रदान करे तथा मधुपर्क प्राशन्न करायें। पिता उत्तराभिमुख होवे. वरुण कलश वेदी पश्चिम मे रखें।

कन्या तथा कुंभ के मध्य अन्तर्पट करे । मङ्गलाष्टक पढ़े।

अन्तर्पट हटाकर कन्या पिता सपत्नीक कन्यादान का संकल्प करे –

(कहीं किसी पद्धति में पंचसूत्र से ''परित्वा'' इत्यादि मंत्रों से जो कि अर्क विवाह में दिये हैं, कन्याकुंभ को दश बार वेष्टन कन्यादान से पहिले लिखा है। परन्तु सूर्य वरुण संवाद के अनुसार तंतु बंधन विवाह विधि के बाद ही करना चाहिये ।)

कन्यादान संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य....... शुभ पुण्यतिथौ अमुकोऽहं मम अस्या कन्याया विषकन्यायोग, मृतवत्सा, काकवन्ध्या

जनन वैधव्य दोष अनुपत्तये श्री विष्णु स्वरूपिणे अश्वत्थकुंभाय श्रीरूपिणी वरार्थिनीं इमां कन्यां तुभ्यमहं संप्रददे। जल कन्या के हस्त में डाले व उस हाथ को वरुण कलश पर रखावें। प्रार्थना करें -

गौरीं कन्यामिमांश्लक्ष्णां यथा शक्ति विभूषिताम्।
ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा ॥

इसके बाद अञ्चलग्रंथिबंधन करे विवाह विधि की तरह सर्व कार्य करें। लाजा होम करें तो कन्या वरुण कलश प्रणीता ब्रह्मा सहित अग्नि की प्रदक्षिण करें। विवाहवत करे। वरुण कलश को कन्या के साथ नहीं घुमावे। सप्त अक्षत पुञ्जों पर वधु के पैर का स्पर्श करे सप्तपदी पढ़े। सप्तवचन कहना व वरवधू की तरह अग्नि के फेरे करना हमें उपयुक्त कम लगता है, यहाँ कन्या का विष्णुरूपी वरुण से ब्रह्म सम्बन्ध ही होता है।

(अन्य ब्राह्मण का वरण किया हो तो विधि के अनंतर उससे आयुष्य मंत्र का जाप करवाये)

आयुष्य मंत्र -

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ठ रायस्पोष मौदिद्भदम्।
इदं ठ हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया विशतादुमाम ॥
दीर्घायुस्त ओषधे खनितायस्मै चत्वाखनाम्यहम्।
अथो त्वन् दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥

इसके बाद कन्याकुंभ को पंचगुणित सूत्र से "परित्वादि दश मंत्रों से" जो कि अर्क विवाह में कहे है से दशबारवेष्टन करे। स्वस्ति सूक्त पढ़े, शांति स्तोत्र पढ़े। कुछ देर ठहरकर कन्या कुंभ के दशबार वेष्टित सूत्र में से कुंभ को निकाल लेवे। विष्णु प्रतिमा कलश में से निकाल लेवे तथा कुंभ को जल में विसर्जन करे।

पहिने हुये वस्त्र अलंकार सौभाग्य सूत्र का परित्याग करे। लोकाचार में कन्या की चूड़ियां बड़ी करते है, अलग रख देते हैं, रुदन करते हैं।

कन्या शुद्ध स्नान करके वस्त्रादि धारण करे, आचार्य पंचपल्लव ...से अभिषेक करे। कन्या विष्णुप्रतिमा वैवाहिक वस्त्र सुवर्ण अलंकार ...चार्य को दान करे -

ॐ अद्येह अमुकगोत्रा अमुकनामधेयाहं मम जन्मसामयिक ...नाद् अमुक स्थान स्थिता क्रूर दुष्टग्रह संसूचित वैधव्य दोष ...रिहार द्वारा सौभाग्यफल प्राप्तिपूर्वक भविष्यन्मद्भर्तृ ...शरीरारोग्यायुर्वृद्धि कामा इमे सुपूजिते विष्णुवरुण प्रतिमा इमानि ...वैवाहिक वस्त्रालंकारदीनि च अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

आचार्य कहे- "स्वस्ति" प्रतिवचनं। कन्या आचार्य से तीन बार पूछे- ...भो ब्राह्मणाः अहं अनेन कुंभविवाह कर्मणा अनघास्मि। आचार्य तीन बार कहें- त्वमनघाऽसि एवमस्तु। इसके बाद यथाशक्ति दान, दक्षिणा, ब्राह्मण भोजन का संकल्प करायें। ब्राह्मण आशीर्वाद देवें।

(इति कुंभ विवाह)

॥ विष्णु प्रतिमा विवाह विधि ॥

विष्णु विवाह विधि कुंभ विवाह की तरह ही है। संकल्प में फर्क है। इसमें विष्णु प्रतिमा मंडल पर ही विराजमान करते हैं। जलपूर्ण कुंभ में नहीं रखते अतः कुंभ को जल में विसर्जन करने का कर्म नहीं होगा।

कन्या पिता विवाह पूर्व शुभ दिन चन्द्र तारा अनुकूल देखकर एकान्त में, मंदिर में अथवा पीपल के नीचे, वेदी मंडप विधान कर विवाह विधि तैयारी करे।

कन्यापिता पूर्व की तरफ मुंह करके बैठे। विष्णु का प्रधान मंडल पूर्व में स्थापित करें। इस विधि में कन्या द्वारा विष्णु की अर्चना होगी अतः कन्या पिता के दक्षिण भाग में बैठकर विष्णु पूजन करे।

गणपतिस्मरण पूर्वक पिता संकल्प करे -

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णु .... शुभ पुण्यतिथौ अमुक नामाहं मम अमुक नाम्नी अमुक राशि अस्याः कन्याया जन्मसामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थितामुक ग्रहैः संसूचित विषकन्या बालवैधव्यादि दोष नानाविधवन्ध्या, काकवन्ध्या, दुर्भगा दोष निराकरण पूर्वक सौभाग्यप्राप्ति द्वारा आरोग्यैश्वर्य्याभि वृद्धि पूर्वक दाम्पत्यैश्वर्य्य सुखसौभाग्य वाप्तये श्री परमेश्वर प्रीतये च विष्णुप्रतिमाया कन्योद्वाहकर्माहं करिष्ये।तदअङ्गत्वेन गणेशाम्बिका मातृका वर्साद्धारा पूजनं नान्दी श्राद्ध, पुण्याावाचन विष्णु पूजनं चाहं करिष्ये। तत्रादौ वरुण गणपति पूजनं करिष्ये ।

गणेशादि पूजन करके कन्या के कंकण बंधन करें। आचार्य वरण करें-

एभिर्गन्धादिभिः विष्णुप्रतिमा प्रतिग्रहार्थं त्वामहं वृणे ॥

प्रार्थना करे –

उद्वाहयिष्ये विधिवदच्युतेन मनोहराम् ।
कन्यां सौभाग्य सौख्यार्थ हेतवेऽहं द्विजोत्तम ॥

विष्णु की चतुर्भुज सुवर्ण मूर्ति शंख चक्र गदा पद्म सहित प्रतिमा को ग्रहण करे । अग्न्युत्तारण पूर्वक मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करे ।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हंसः अस्याः विष्णुमूर्ते प्राणा इह प्राणा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं .... अस्या विष्णुमूर्ते जीव इह स्थितः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं........ अस्या विष्णुमूर्ते वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पादपायूपस्थानी सर्वेन्द्रियाणी सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

१६ बार ''ॐ'' का जप करते हुये षोड़श संस्कार की भावना करे ॥ मूर्ति को तण्डुलपूर्णपात्र में विराजमान करे ।

ॐ एतं ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं समिमं दधातु।विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुवर्णप्रतिमायां श्री विष्णो इहागच्छेह तिष्ठेह। सुप्रतिष्ठितो वरदोभव ।

कन्या को विष्णु प्रतिमा के पास बिठाये अथवा पिता के दक्षिण भाग बैठकर पूजन करे । कन्या पूजन सङ्कल्प करे –

ॐ अद्येह अमुकगोत्रा अमुकनामधेयाया मम जन्मसामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थितामुकामुक ग्रहैः संसूचित बालवैधव्य दोष निराकरण पूर्वक सौभाग्यसमृद्धि द्वारा भविष्यन्मद्ध- र्तुरारोग्यैश्वर्य्याभि वृद्धिकामा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं च सुवर्ण प्रतिमायां श्री विष्णोः पूजनं करिष्ये ।

ध्यान करे –

निर्मिता रुचिरां शंखगदाचक्राब्ज शोभिताम् ।
दद्यातां वाससी पीते कुमुदोत्पलमालिनीम् ॥

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि । विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥

पाद्यादि समर्पण करे । षोडशोपचार से पूजन करे ।

प्रार्थना करे –

देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः ।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु ॥

अब विवाह विधि संपन्न करे इसके लिये कन्या पिता उत्तराभिमुख या पश्चिमाभिमुख होकर वेदी समीप में बैठे तो ठीक रहेगा । विष्णु प्रतिमा मंडल वेदी के पश्चिम भाग में रखे । प्रतिमा व कन्या का मुँह पूर्व की ओर रहे । कन्या प्रतिमा के दक्षिण भाग में बैठे ।

कन्या पिता विवाह विधि की तरह विष्टर, पाद्य, मधुपर्क समर्पण करे ।

कन्या तथा विष्णुप्रतिमा के अन्तराल में अन्तर्पट करे । समञ्जन करे । विप्र विवाह में बोलने वाले मङ्गलाष्टक का पाठ करे । इसके बाद अन्तर्पट हटाले ।

आयुष्य मंत्र के जप करने के लिये एक विप्र का वरण करे।

मंत्र –

नवो नवो भवति जायमानो ह्ना केतुरुष सामेत्यग्रम् । भागं देवेभ्यो विद्धात्यान्प्र–चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ उच्चादिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सहते सूर्येण । हिरण्यदा अमृतत्वं भजंते वासोदाः सोमप्रतिरंत आयुः ॥

कन्या पिता कन्यादान संकल्प करे ।

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णुः .... अद्येह अमुकोऽहं अमुकराशे अमुक नामधेयाया ममास्याः कन्याया जन्म सामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थानस्थिता मुकामुकग्रहैः संसूचित बालवैद्यव्यादि दोष निराकरण पूर्वक सौभाग्य सिद्दि द्वारा ततद्भविष्यद्भर्तुरारोग्यैश्वर्य वृद्धि कामः अमुकगोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीं श्रीरूपिणीं इमां कन्यां विष्णवे तुभ्यं समर्पयामि।

तत्पश्चात् अञ्चलग्रंथि बन्धानादि सर्वकार्य विवाह विधि की तरह करे । यहाँ कन्या का विष्णु से ब्रह्म सम्बन्ध स्थापित होता ही सिद्ध होता है अतः वरवधू की तरह अग्नि के फेरे व सप्तपदी कहना

हमें अनुपयुक्त लगता है । लाजा होम करे तो कन्या विष्णु प्रणीता ब्रह्मा सहित अग्नि की चार परिक्रमा करे विवाहवह करे । शालिग्राम के कन्या के साथ नहीं घुमावे । सप्तदी हेतु सप्त अक्षत पुंजो पर वधु को पैर रखाकर पढ़ सकते है परन्तु सप्त वचन कहना ठीक नहीं लगता। इसके बाद ''परित्वा'' इत्यादि जो १० मंत्र अर्क विवाह में कहे हैं उनको पढ़ते हुये पंचगुणी सूत्र से कन्या तथा प्रतिमा को दशबार वेष्टन करे। कुमकुम हरिद्रा से कन्या को सुशोभित करे ।

कुछ देर पश्चात् शांतिपाठ करे प्रतिमा को वेष्टित सूत्र में से निकाल लेवे ।

भगवान विष्णु को यथा शक्ति द्रव्य दक्षिणा समर्पण करे ।

ॐ अद्य वैधव्यदोष निवृत्तये कृतैतद्विष्णु प्रतिमाविवाह कर्मणः साङ्गता सिध्यर्थ सादगुण्यार्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं च इमां दक्षिणां विष्णवे तुभ्यं सम्प्रददे ॥

कन्या विष्णु प्रतिमा आचार्य को देते हुये संकल्प करे –

ॐ अद्येह अमुक गोत्रामुकामुक नामधेया मम जन्मसामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थितामुकामुकग्रहैः संसूचित बालवैधव्यादिनाना दोष नाशन पूर्वक भविष्यन्मद्भर्तृ शरीरारोग्यायुर्वृद्धि कामा इमां सुपूजितां विष्णु प्रतिमां अग्निदैवतां अमुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

प्रार्थना करे –

यन्मया पूर्वजनुषि घ्नन्त्या पतिमनागसम ।
विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतो वातिविरक्तया ॥१॥
प्राप्यमाणं महाघोरं यशः सौख्य धनापहम् ।
वैधव्याद्यति दुःखौघनाशाय सुखलब्धये ॥२॥
बहु सौभाग्य लब्ध्यै च महाविष्णोरिमां तनुम् ।
सौवर्णीं निर्मितां शक्त्या तुभ्यं संप्रददे द्विज ॥३॥

प्रतिमा ब्राह्मण को देते हुये ३ बार कहे –

द्विजकरे सोपकरणं विष्णुप्रतिमां दत्त्वा अनद्याऽहमस्मीति ॥

ब्राह्मण कहे –

ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु ।
ॐ स्वस्तीति प्रतिगृह्य ॥

ॐ कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात् । कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥

इसके बाद यथा शक्ति दान दक्षिणा ब्राह्मण भोजन का संकल्प कराये । कन्या वस्त्र अलंकार आचार्य को प्रदान करे । ब्राह्मण आशीर्वाद कहे ।

(यहां रुदन नहीं करे क्योंकि वर विष्णु तो अमर है, घट का विसर्जन भी नहीं किया है)

(इति विष्णु प्रतिमा विवाह)

॥ पीप्पल विवाह ॥

पीप्पल में विष्णु का निवास माना है तथा पिप्पली को लक्ष्मी का रूप माना है । अतः वैधव्य दोष निवारण हेतु पीप्पल के साथ कन्या विवाह का लेख भी है ।

इसमें विवाह विधि विष्णु प्रतिमा विवाह की तरह ही है । पूजन संकल्प वही है ।

सुवर्ण की प्रतिमा बनाकर पीप्पल के नीचे कलश एवं तण्डुल पात्र पर रखें। सुवर्ण प्रतिमा व पीप्पल में एकीभाव भाव करते हुये षोड़शोपचार पूजन करे ।

पीप्पल (प्रतिमा) तथा कन्या के मध्य अंतर्पट करें । मंगलाष्टक का पाठ करे । कन्यादान का संकल्प विष्णु विवाह की तरह करे। विवाह विधि करे ।

"परित्वा" इत्यादि दश मंत्र जो अर्क विवाह में कहे है उनसे पंचगुणी सूत्र द्वारा कन्या व पीप्पल को दशबार वेष्टन करे । कुछ समय बाद विष्टित सूत्र में से प्रतिमा निकाल लेवे ।

पूर्व विधि की तरह प्रतिमा वस्त्र अलंकार आचार्य को देवे। आचार्य आशीर्वाद कहे ।

क्योंकि पीप्पल का पेड़ तो वहीं रहेगा, घट विसर्जन नहीं होगा अतः रुदन वगैरह नहीं करना चाहिये । वियोग का मानसिक संताप करना चाहिये ।

(इति पीप्पल विवाह)

॥ पुनर्भू विवाह ॥

पुनर्विवाह कई परिस्थितियों में हो सकता है। अलग–अलग परिस्थिति में अलग–अलग रिवाज, वेदी विधान होंगे। अग्नि का नाम भी अलग–अलग होगा। ऐसे कई विषय है जो सर्वसाधारण के विचार से बाहर है । निम्न परिस्थितियाँ पुनर्विवाह की हो सकती है ।

(१) श्रीधरीय में कहा है कि विवाह हो जाने के बाद ऐसा महसूस होवे कि विवाह के दिन पंचांग शुद्धि ठीक नहीं बनी, उल्कापात, भूकंप योग, ज्वालामुखी योग, दम्पत्ति के अशौच आदि दुष्योगों का समावेश हो गया, विवाहकाल का अतिक्रमण हो गया हो तो वर वधू का फिर से विवाह करे । (निर्णय सिन्धु)

(२) स्त्री जीवित हो असाध्य रोगिणी हो, वन्ध्या हो, पुरुष युवा हो तो संतान की इच्छा हेतु स्त्री के जीवित रहते दूसरा विवाह करे।

(३) स्त्री की मृत्यु होने पर पुरुष दूसरा विवाह अविवाहित कन्या से करे ।

(४) प्रथम स्त्री से तलाक हो गया हो दूसरा विवाह अविवाहित कन्या से करे ।

(५) पुरुष का विवाह नहीं हुवा हो, अवस्था अधिक हो गई या अन्य किसी परिस्थिति से विधवा स्त्री से विवाह करे ।

(६) स्त्री पुरुष दोनों ही का पुनर्विवाह हो ।

(७) विवाह बाद कन्या तत्काल विधवा हो जाय और अविवाहित पुरुष से विवाह करे ।

(८) राजा महाराजा एक से अधिक विवाह करते थे ।

ऐसे अन्य कई प्रसंग है जिनमें पुनर्विवाह होता है, उन्हें अग्न्याधान आदि कई प्रपंच व लोकाचार का भेद है । जिससे अधिक गहराई में जाने पर विषय जटिल हो जायेगा । अतः सामान्य विधिक्रम से पुनर्विवाह विधि लिख रहे हैं ।

।। पुनर्विवाहे अग्निविचारः ।।

कात्यायन ऋषि का मत है कि यदि पत्निवाला मनुष्य किसी कारणवश दूसरे विवाह की इच्छा रखता है तो वह उसी अग्नि में हवन करे लौकिक अग्नि में नहीं करें ।

त्रिकाण्डमण्डन ने कहा है कि पहली स्त्री के रहते हुये दूसरी स्त्री से विवाह करना है तो विवाह संबंधि सब कार्य आवसथ्य अग्नि में करे । सुदर्शनभाष्य में कहा है कि दूसरे विवाह का हवन लौकिक अग्नि में करे औपासन अग्नि में न करें ।

कालान्तर में हवन करके दोनों अग्नि का संबंध करे उसकी विधि प्रयोगरत्न में कही है ।

।। स्त्री के मरने पर पुनर्विवाह ।।

विवाहवत् सभी कार्य करें । विवाहसमय लौकिक अग्नि व योजक नाम्नी अग्नि का समन्वय कर होम करे । कन्या में पूर्व पत्नि की भावना करे । सुवासिनी को भोजन करायें पूर्व पत्नि के नाम से वस्त्रालंकार देवें । पूर्व पत्नि की तस्वीर वाला मंगलसूत्र वधू को प्रदान करें ।

।। स्त्री का पुनर्विवाह ।।

(पुरुष अविवाहित)

स्त्री विवाह के कुछ समय पश्चात कन्या विधवा हो जाय और अविवाहित पुरुष से विवाह हो तो वर पक्ष को तो खुशी रहती है । गाजे-बाजे, घोड़ी सहित आना चाहते हैं । लोकाचार भी निभाना है, वेदाचार भी निभाना है । ऐसी स्थिति में मध्यमार्ग अपनाना होगा ।

पूर्व पति से भोग के प्रायश्चित निमित्त कन्या से आचार्य प्रायश्चित हवन विवाह पूर्व करा सकता है । अथवा विवाह समय द्रव्य दान करावें।

हवन का संकल्प –

ॐ अद्येत् शुभपुण्यतिथौ अमुकगौत्रीं आमुकीऽहं मम पर पूर्व भर्तृ अङ्गसङ्ग ज दोष पापाऽभाव सिद्ध्यर्थे श्री परमेश्वर प्रीतये प्रायश्चित हवने विनियोगः ।

मंत्र –

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयंतु त्वष्टरूपाणि पिंशतु ।
आषिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ।।

तोरण नहीं होगा, वरमाला होनी चाहिये। कन्यादान संकल्प नहीं होगा, वधू स्वयं वरग्रहण का संकल्प करे। परन्तु कुछ परिजनों कि इच्छा रहती कि हम इस हवन में बैठें। पिता तो पहले कन्यादान कर चुका होता है अतः वह दुबारा कन्यादान नहीं कर सकता। अतः स्वगौत्र के अलावा मामा, फूफा, इत्यादि में से कोई कन्या को गोद लेकर उसे अपनी पुत्री के रूप में मानकर दान, हवनादि कर्म कर सकता है। विवाह होम लौकिक अग्नि तथा वरदनाम्नी अग्नि में होगा।

वर के पुनर्विवाह, दूसरे विवाह में नान्दीश्राद्ध वर स्वयं करता है, वर का पिता नहीं। इति शास्त्र वचनम्। यहाँ राष्ट्रभृद्धोम हो सकता है क्योंकि इसमें देवताओं से रक्षा वचन माँगा है। अभ्यातन होम में अग्नि, इन्द्र, सूर्य, सोम, विष्णु, शिव, समुद्र, पितरादि देवताओं से प्रार्थना है कि आप हमारे इस क्षेत्र में आकर हमें आशीष प्रदान

करें अतः यह होम भी हो सकता है । अग्नि की पंचाहुति हो सकती है । लाजा होम नहीं होगा सप्तपदी नहीं होगी । लोकाचार वश करना पड़े तो सप्त अक्षत पुंजो पर वधू का पैर रखवावें । वर–वधू से सप्त वचन की जगह प्रतिज्ञा संकल्प करावे । ग्रहशांति हो सकती है ।

वर वधू का हाथ पकड़कर एक परिक्रमा करेगा । विशेष अन्य विधियां वरवधू पुनर्विवाह में देखे ।

इस विवाह कार्य हेतु वरवधू पूर्वाभिमुख बैठे । गणपति स्मरणपूर्वकं संकल्प करे ।

वर – ॐ अद्येत् .... शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोमुक नामाऽहं अस्या अमुक गोत्रीया (कन्या का जिस गोत्र में विवाह हो चुका था) अमुक नाम्नी पतिंवराया पुनर्भूस्वीकरण सहितं प्रजोत्पादनभोग सुख फलावाप्तये शास्त्र विधिना विवाह संस्कार सांगता सिद्ध्यर्थं श्री गणेशाम्बिका, मातृका नवग्रह कलश कुलदेवता पूजनं चाहं करिष्ये।

वधु (पतिंवरा) ॐ अद्येत् .... शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रा (जिस गोत्र में पहिले विवाह हो चुका हो) आमुकी देवी स्ववरणीय पतिसमन्वितायामम समस्त दुःख शोक प्रत्यूहसमुदाय प्रध्वंसपूर्वकं सर्वाभिष्ट साधनाय गृहस्थ धर्म पालनाया ऽधिकार सिद्ध्यर्थे भोगसुखावाप्तये अमुक नाम्ने वराय सहिताय पुनर्भू संस्कार साङ्गता सिद्ध्यर्थं श्री गणेश मातृका नवग्रह कलश कुलदेवता पूजनं चाहं करिष्ये ।

पतिंवरा प्रायश्चित संकल्प करे –

ॐ अद्येत् .... शुभ पुण्य तिथौ अमुकगौत्रीं आमुकीऽहं मम पर पूर्व भर्तृअङ्गसङ्गज दोष पापाऽभाव सिद्ध्यर्थं योनिशुद्धिभावार्थे इदं हिरण्य द्रव्य दैवतं नाना नाम्ने ब्राह्मणेभ्यो दातुर्महसि ।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयंतु त्वष्टरूपाणि पिंशतु ।
आषिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥

वर एवं पतिंवरा गणेश मातृका नवग्रह आदि का पूजन करें । आचार्य का वरण करें ।

पतिंवराया स्वशरीर दानं – यहां कन्या दान नहीं होगा, पतिंवरा स्त्री स्वयं अपने शरीरदान का संकल्प करे –

ॐ अद्येत् शुभपुण्य तिथौ अमुकगोत्रीऽमुक देवी स्ववरणीय पति समन्विताया मम समस्त दुःखशोक प्रत्यूह समुदाय प्रध्वंस पूर्वकं सर्वाभीष्टसाधनाय अमुकगोत्रायाऽमुक माम्ने वराय स्वशरीरं तुभ्यमहं प्रदान करिष्ये ।

पति प्रतिज्ञा संकल्प करे –

ॐ अद्येत् शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोऽमुकाहं ममगृहस्थधर्म प्रजोत्पादन भोगसुखावाप्तये अमुक गोत्री अमुक देवी पतिंवराया पुनर्भूस्वीकरणमहं करिष्ये ।

वेदी विधानम् – पतिंवरा वर के दक्षिण भाग में रहे। अञ्चलग्रंथिबंधन करें। कुशकांडिकापूर्वक ग्रह देवता, कुलदेवता मन्त्र की आहुति देवें।

क्योंकि वर का प्रथम विवाह हैं । अतः राष्ट्रभृद्धोम, अभ्यातन होम, अग्नि की पंचाहुति होम करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये जैसा देशकुलाचार हो वैसे करें। हवनादि पश्चात् वर–पतिंवरा परस्पर हस्तग्रहण करें –

हस्ते गृह्णीव परस्परं ग्राहयाम् उपस्थितैः ।
वरं सम्पादयामोऽभीष्टं पटपाठ सुखाय च ॥
पुत्र पौत्रादि विवृद्ध्यर्थं दम्पत्ति वास सुखाय च ।
एष नः पटपाठोऽपि पूर्वेषां सुसुखाय च ॥

अग्नि परिक्रमा – हस्त ग्रहण सहित वर आगे रहते हुये अग्नि की एक प्रदक्षिणा करें ।

वह्निः प्रदक्षिणी कुर्मः प्रतिपादं सुखाय नः । कामाग्निः शोभनो भूयात् कामो देवः प्रसीदतु ॥

वरवधु का प्रतिज्ञा संकल्प

इस समय सप्तपदी व सात वचन के अभाव में वर–वधू (पतिंवरा) संकल्प करें कि – हम अपने–अपने पिछले मनोभेदभावों को हटाते हुये, सामाजिक लोकिक अपवाद से परे रहते हुये गृहस्थ धर्म की पालना करते हुये एक दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखते हुये, धर्म काम, सुख व मोक्ष की प्राप्ति हेतु इस विवाह प्रेम बंधन को स्वीकार करते हैं ।

वधू (पतिंवरा) वर के वामभाग में आवे । वर सौभाग्य सिन्दूर प्रदान करें ।

दिवासूर्यं रात्रौ अरुंधतीं प्रणमेत् ॥

सुवासिनी से वरवधू की आरती करायें । वधू की गोद भरने का व वस्त्रादि देने का हो तो वह करें । सगे संबंधि भी जो देना चाहे वह वस्त्रालंकार प्रदान करें ।

ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा देवें । आशीर्वाद ग्रहण करें ।

।। वर वधू दोनों का पुनर्भूविवाह ।।

जब वर वधू दोनों का पूर्व संबंध विच्छेद हो गया हो, तलाक हो गया हो अथवा वर विदुर हो और वधू भी विधवा होवे इस परिस्थिति में विवाह पद्धति में भेद होगा । स्वयंवर प्रथा की तरह विवाह होगा। विवाह मुहुर्त के अभाव में सूर्यभात् चक्र से शुद्धि देखकर विवाह हो सकता है । लोकिक व वरदनाम्नी अग्नि में संस्कार होगा जैसा कि अग्नि प्रदक्षिणा में मंत्र है उसके अनुसार कामाग्निनाम भी हो सकता है ।

वरवरण – पतिंवरा अपने इच्छित वर, देवर या अन्य विधुर जिसके साथ संबंध करना चाहे ब्राह्मण के द्वारा फल, पुष्प, मिष्ठान भेंजकर ब्राह्मण द्वारा ही वरण करायें ।

वर द्वारा गणपति पूजन कराकर ब्राह्मण वर को फल, पुष्प, माला भेंट करे –

ॐ तस्मिनकालेऽग्निसान्निध्ये स्नातास्नाते ह्यरोगिणी । आत्मानं दास्यते सेति भोगार्थं स्वर्गसिद्धये ॥

वर कहे – वृतोऽस्मी । पुष्प शिर के लगाये फल का भक्षण करे ।

विवाह विधि

अन्य शुभ दिन में वर एवं पतिंवरा (स्त्री) स्नानादि करके वस्त्र परिधान भूषण अलंकार धारण करके देवार्चन हेतु पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठे ।

पूजन सङ्कल्प – ॐ अद्येत्...... शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोमुक अमुकनाम्नी पतिंवरां प्रजोत्पादन भोग सुखावाप्तये शास्त्रविधिना पुनर्भूविवाह संस्कार साङ्गतासिद्ध्यर्थं श्री गणेशाम्बिका, मातृका नवग्रह कलश कुलदेवता पूजनं चाऽहं करिष्ये ।

इसी तरह वर से संकल्प करावें ।

आचार्य गणपति मातृकादि का पूजन कराये । स्वस्त्ययनं कुर्यात्।

(नान्दी श्राद्ध करना हो तो वर स्वयं करे विवाह पहिले भी नान्दी श्राद्ध करना हो तो वर स्वयं करे वर का पिता नहीं करें ।)

पतिंवरायाः स्वशरीर दानं – यहां कन्यादान नहीं होगा पतिंवरा (वधू) स्वयं अपने शरीर का दान करे ।

ॐ अद्येत्...... शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रीऽमुकदेवी स्ववरणीय पति समन्वितायाः मम समस्त दुःखशोक प्रत्यूहसमुदाय प्रध्वंस

पूर्वकं सर्वाभीष्ट साधनाय अमुक गोत्रायाऽमुक नाम्ने वराय स्वशरीरं तुभ्यमहं प्रदान करिष्ये ।

पति स्वीकरण प्रतिज्ञा संकल्प

ॐ अद्येत् शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकाहं परपूर्वभार्याङ्गसङ्गज पापाभाव पूर्वक स्वर्गजनक–धर्माविरुद्ध भोगसुखावाप्तये शास्त्रविधिना पुनर्भूस्वीकरणमहं करिष्ये ।

वर वधू एक दूसरे को माल्यार्पण करे (कहीं–कहीं मालार्पण पहिले करा देते हैं)

वर पूर्व में खड़ा होवे वधु पूर्व की तरफ मुंह करके खड़ी होवे। पतिंवरा (वधू) पति के चरणों का स्पर्श भगवान विष्णु का ध्यान करते हुये करे ।

प्रार्थना

त्वं विष्णुः कमलकान्तः साक्षादव्यय ईश्वरः ।
तुभ्यमात्म प्रदानेनाऽऽवां भवतामपापिनौ ॥
धर्मः सत्यं तपः सत्यं शास्त्रं तवाज्ञया ।
तेन सत्येन देवेश न भवेत्पापमावयोः ॥

वधू वर (पति) के तिलक करे कुंकुम हरिद्रा रंजित मंगलसूत्र (कंकण बंधन) वर के हाथ में बांधे या आचार्य बांधे । पुष्पमाला प्रदान करे । दास्य भावना स्वीकार करे ।

अद्यंप्रभृति तव दासी ॥ वर कहे – भवामीति ब्रूयात् ।

वधू अपना बायां हाथ हृदय पर रखे दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे –

ॐ अद्येत .... शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्राऽमुक देवी पतित्यक्ता वा बालविधवात्व प्रदापकानेक जन्मार्जित दुरितपुञ्ज–निवृत्तिपूर्वकं

द्धय–संयुतनिरतिशयानन्दरूप मुक्ति लब्धये इमं पाञ्चभौतिकं स्वीयं कलेवरं अभयदैवतकं त्वदुपभोगार्थं अमुकगोत्रायऽमुकनाम्ने वराय तुभ्यमहं समप्रददे ।

वर कहे – वर अपना दक्षिण हस्त वधू के हृदय या स्कंध को स्पर्श करते हुये कहे – ॐ स्वस्तीति वरः प्रतिवदेत् ।

तत्पश्चात् बंधुबांधव की उपस्थिति में अग्नि स्थापन करें। लौकिक अग्नि का आवाहन कर वरदनाग्नि से सामञ्जस कर कुशकंडिका पूर्वक ग्रहदेवता कुलदेवता मंत्रों से हवन करे ।

स्विष्टकृदाहुतिं पूर्णाहुतिं दत्वा । (प्रथम विवाह में पूर्णाहुति नहीं होती, इसमें ग्रहमखशांति करने के कारण पूर्णाहुति होगी)। त्र्यायुषं कुर्यात् ॥

वर पतिंवरा (वधू) को आभूषण प्रदान करें, वस्त्र परिधाय (साड़ी पहिनावें) ।

शरीराऽऽवरणं वासो लज्जायाः करणं परं ।
लज्जायास्ते सुखायाहं क्षिपाम्येतत् तवोपरि ॥
(दिवा सूर्यं रात्रौ अरुन्धतीं प्रणमेत् ॥)

वर वधू परस्पर हस्तग्रहण करें । यथा मंत्र –

हस्तेगृह्णीव परस्परं ग्राह्याम उपस्थितैः ।
वरं सम्पादयामोऽभीष्टं पटपाठसुखाय च ॥१॥
पुत्र पौत्रादि विवृद्ध्यर्थं दम्पती वाससुखाय च ।
एष नः पटपाठोऽपि पूर्वेषां सुसुखाय च ॥२॥

हस्त ग्रहण करते हुये अग्नि की एक प्रदक्षिणा वर आगे होते हुये करे । मंत्र –

वह्निं प्रदक्षिणीकुर्मः प्रतिपादं सुखाय नः ।
कामाग्निः शोभने भूयात् कामो देवः प्रसीदतु ॥
(संस्रवं प्राशनं कुर्यात् ।)

सगे संबंधि कुछ देना चाहे तो वर वधू को वस्त्र अलंकार देवें।

आचार्य दक्षिणा भूयसी दक्षिणा ब्राह्मण भोजन का संकल्प कराये। ब्राह्मण आशीर्वाद प्रदान करे ।

वर कुछ भक्ष्य भोज्य द्रव्य लेकर ५ ग्रास पतिंवरा को देवे । अथ मन्त्रा

प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि ॥१॥
अस्थिभिरस्थीनि सन्दधामि ॥२॥
त्वचा ते त्वचं सन्दधामि ॥३॥
मांसैस्ते मांसान् सन्दधामि ॥४॥
मम वाचमेकमना जुषस्व ॥५॥

याग फल भगवान विष्णु को अर्पण करे –

ॐ सर्वभूताधिवासः श्रीविष्णुरीशः सनातनः ।
संतुष्टोऽनेन यागेन सिन्धौ पापमुप क्षिपेत् ॥

सुवासिनी से आरति करायें । ब्राह्मण शुभाशीष प्रदान करें ।

(इति पुनर्भूविवाह)

(अंश भाग कर्मठगुरु)